Defence Research and Development Organization

Defence Research and Development Organization (DRDO) is country's leading defence R&D organization involved in design and development of indigenous defence systems for the Indian Armed Forces. The organization has contributed immensely in making India a self-sufficient and self-reliant country in defence equipment. DRDO's product profile includes a varied range of defence platforms, system and weapon systems. DRDO has seven technology clusters viz. Aeronautical Systems, Armament and Combat Engineering Systems, Electronics and Communication Systems, Life Sciences, Micro Electronic Devices and Computational Systems, Missiles and Strategic Systems and Naval Systems and Materials. Together, these clusters which consist of 52 research labs, have produced Aeronautical System, Missiles, Fight Aircraft, Combat Vehicles, Tanks, Radars, Armaments, Under Water Sonars, Electronic Warfare, Computational Systems, Life Science & Engineering Systems, Surveillance and Recce Systems, Naval and Airborne Weapon Systems etc. DRDO also has three certification agencies for the certifications of military airworthiness of products, fire and explosives, and grading of information security products, which also serves other organisations of the Government of India. Besides, DRDO has an Institute of Technology Management, Recruitment and Assessment Centres for tapping of talent at grass root level.

With an eye to encourage the growth of the domestic industry, DRDO has established an eco-system for design, development and manufacturing. Over 1000 small and medium scale enterprises (SMEs) are working very closely with DRDO labs. DRDO labs have a close R&D partnership with academia in pursuit of research. Several Centres of Excellence in premier academic institutions of the country have been set up for pursuing R&D in critical defence technology. The prominent ones are IIT Mumbai, IIT Chennai, IIT Delhi and Jadhavpur University Kolkata. DRDO is the recipient of the prestigious National Intellectual Property Award 2015 in the category "Top R&D Organizations for Patents".

In the past three years the Government's exceptional push has enhanced and nurtured the technical path traversed by DRDO to reach the present stage of confidence, technical maturity, and deliverability. Weapon systems, platforms and dual use equipment developed by DRDO which can be valued to the tune of Rs. 1.6 lakh cr. are being inducted in our Armed Forces, Para-Military Forces and are transferred for civilian use.

DRDO is progressively working towards strengthening the country's armed forces and consolidating its international stature. With increased acceptability, credibility and visibility, the export potential of DRDO developed system has also increased. A good number of countries have shown interest in acquiring DRDO developed products.

This year will go down as a milestone in DRDO journey as it celebrates its diamond jubilee. These sixty years of DRDO are marked with laborious and unparalleled research endeavours in the field of high-end defence technologies and production of various tactical and strategic weapons and platforms.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Defence Research and Development Organization on its diamond jubilee.

Credits:

Text	:	Based on the information received from proponent
Stamp/FDC/Brochure	:	Sh. Kamleshwar Singh
Cancellation Cachet	:	Smt. Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA
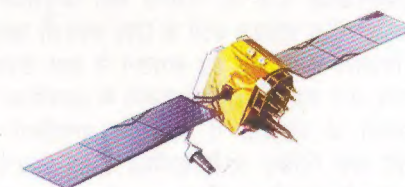
DRDO

हीरक जयंती 1958-2018 DIAMOND JUBILEE

विवरणिका BROCHURE

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन

डीआरडीओ देश का अग्रणी रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन है जो भारतीय सशस्त्र बलों के लिए स्वदेशी रक्षा प्रणालियों की रचना और विकास में शामिल है। संगठन ने रक्षा उपकरणों में भारत को आत्मनिर्भर और स्वावलम्बी देश बनाने में अत्यधिक योगदान दिया है। डीआरडीओ के उत्पादों में रक्षा मंच प्रणालियों और हथियार प्रणालियों की एक विविध श्रेणी शामिल है । डीआरडीओ में सात तकनीकी समूह, वैमानिकी प्रणालियां, शस्त्रास्त्र और युद्ध अभियांत्रिकी प्रणालियां, इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार प्रणालियां, जीव विज्ञान, माइक्रो इलेक्ट्रॉनिक उपकरण और संगणनात्मक प्रणालियां, प्रक्षेपास्त्र और सामरिक प्रणालियां तथा नौसेना प्रणालियां और सामग्री शामिल हैं । इन समूहों में 52 अनुसंधान प्रयोगशालाएं शामिल हैं, जिन्होंने वैमानिकी प्रणाली, प्रक्षेपास्त्र, लड़ाकू विमान, युद्धक वाहन, टैंक, रडार, शस्त्रास्त्र, पानी के भीतर वाले सोनार, इलेक्ट्रॉनिक युद्धकला, संगणनात्मक प्रणाली, जीव विज्ञान और अभियांत्रिकी प्रणाली, निगरानी और टोह प्रणालियां तथा नौसेना और एयरबोर्न हथियार प्रणालियां आदि का उत्पादन किया है। डीआरडीओ के पास सैन्य विमाननियंत्रण उत्पादों, अग्नि एवं विस्फोटकों तथा सूचना सुरक्षा उत्पादों की श्रेणी निर्धारण के लिए तीन प्रमाणीकरण एजेंसियां भी हैं, जो भारत सरकार के अन्य संगठनों की भी सेवा करती हैं। इसके अलावा, डीआरडीओ में मूल स्तर पर प्रतिभा का दोहन करने के लिए प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान, भर्ती तथा आकलन केन्द्र हैं।

घरेलू उद्योग की वृद्धि को प्रोत्साहित करने के लिए, डीआरडीओ ने डिजाइन विकास और विनिर्माण के लिए एक पारिस्थितिकी तंत्र स्थापित किया है । एक हजार से अधिक छोटे और मध्यम आकार के उपक्रम डीआरडीओ प्रयोगशालाओं के साथ मिलकर काम कर रहे हैं । अनुसंधान के लिए डीआरडीओ प्रयोगशालाओं की शिक्षा संस्थानों के साथ एक करीबी अनुसंधान एवं विकास साझेदारी है महत्वपूर्ण रक्षा प्रौद्योगिकी में अनुसंधान एवं विकास के लिए देश के प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों में उत्कृष्टता के कई केन्द्र स्थापित किए गए हैं ये प्रमुख शैक्षणिक संस्थान हैं – आईआईटी मुम्बई, आईआईटी चेन्नई, आईआईटी दिल्ली और जाधवपुर विश्वविद्यालय कोलकाता। डीआरडीओ "पेटेंट के लिए शीर्ष अनुसंधान एवं विकास संगठन" श्रेणी में प्रतिष्ठित राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा पुरस्कार 2015 का प्राप्तकर्ता है ।

पिछले तीन वर्षों में सरकार के असाधारण प्रोत्साहन ने डीआरडीओ द्वारा चलाए गए तकनीकी पथ को आत्मविश्वास के वर्तमान स्तर, तकनीकी परिपक्वता और निष्पादन योग्यता को बढ़ाया और पोषित किया है । डीआरडीओ द्वारा लगभग 1.6 लाख करोड मूल्य के विकसित हथियार प्रणालियां, मंच और दोहरी उपयोग वाले उपकरण हमारे सशस्त्र बलों, अर्धसैनिक बलों द्वारा स्वीकृत तथा नागरिक उपयोग के लिए हस्तांतरित किए गए हैं ।

डीआरडीओ देश के सशस्त्र बलों को मजबूत बनाने और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कद बढ़ाने के लिए उत्तरोत्तर काम कर रहा है । स्वीकार्यता, विश्वसनीयता और दृश्यता में वृद्धि के साथ, डीआरडीओ द्वारा विकसित प्रणालियों की निर्यात क्षमता में भी वृद्धि हुई है । बड़ी संख्या में दूसरे देशों ने डीआरडीओ द्वारा विकसित उत्पादों को प्राप्त करने में रुचि दिखाई है ।

यह वर्ष डीआरडीओ की विकास यात्रा में एक मील का पत्थर साबित होगा, क्योंकि इस वर्ष डीआरडीओ हीरक जयंती का जश्न मना रहा है । डीआरडीओ के ये साठ वर्ष उच्च रक्षा प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में श्रमसाध्य और अद्वितीय शोध प्रयासों और विभिन्न रणनीतिक हथियारों तथा मंचों के उत्पादन के मामले में उल्लेखनीय उपलब्धियों के वर्ष हैं ।

डाक विभाग रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की हीरक जयंती के अवसर पर स्मारक डाक टिकट जारी करके प्रसन्नता का अनुभव करता है ।

आभार :–

मूलपाठ	:	प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित
डाक टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका	:	श्री कमलेश्वर सिंह
विरूपण	:	श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	1000 पैसा
Denomination	:	1000 p
मुद्रित डाक-टिकटें	:	6.0 लाख
Stamps Printed	:	6.0 lakh
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad
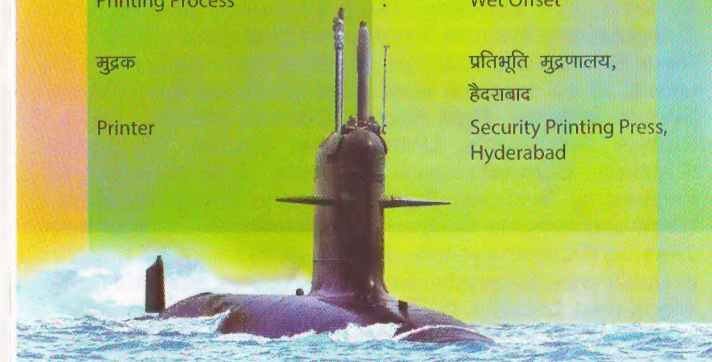
The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्यः 5.00